This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4410**

Unique Paper Code : **205441** **C**

Name of the Paper : **Paper 15 : Hindi 'C' M.I.L.** (आधुनिक भारतीय भाषा : हिंदी 'ग')

(प्रवेश वर्ष 2011 और उसके बाद)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)/II Hindi**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित पाठांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8+8+8=24

(क) यह कथा व्यक्ति की नहीं,

एक संस्कृति की है;

यह स्नेह शांति

सौंदर्य शौर्य की, धृति की है ।

यह धारा संस्कृति की

विशिष्ट अति वेगवान,

केवल भारत की धरती पर

थी प्रवहमान ।

P.T.O.

अथवा

लाल सुरा की धार लपट-सी कह न इसे देना ज्वाला,

फेनिल मदिरा है, मत इसको कह देना उर का छाला,

दर्द नशा है इस मदिरा का विगत स्मृतियाँ साक़ी हैं;

पीड़ा में आनन्द जिसे हो, आए मेरी मधुशाला ।

(ख) मुझे तो आप किसी को, किसी तरह भी नहीं दे सकते । मैं आपकी संपत्ति नहीं हूँ । आपकी सहधर्मचारिणी हूँ । मेरी स्वतंत्र सत्ता है । आपको पराजित करके भी कोई मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध नहीं ले जा सकता, लेकिन पृथ्वी की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है ।

अथवा

सत्ता के खेल बहुत देख चुका भैया! माँ ने ठीक कहा था । मुझे आपसे ईर्ष्या हो रही थी— यह सत्य मुझ पर आज प्रकट हुआ है । मुझे सत्ता नहीं, प्यार चाहिए और वह प्यार मिल सकता है साधना के मंगलमय पथ पर । मैं अब नहीं रुक सकूँगा । कामना करूँगा कि आपका चक्रवर्तित्व युग-युगांत तक मानदंड बनकर रहे ।

(ग) आख़िर हिन्दू और मुसलमान में विचारों ही का तो अंतर है । मनुष्य में विचार ही सब कुछ है । वह विधवा-विवाह के समर्थक हैं । समझते हैं, इससे देश का उद्धार

होगा । मैं समझता हूँ, इससे सारा समाज नष्ट हो जाएगा, हम इससे कहीं अधोगति को पहुँच जाएंगे, हिन्दुत्व का रहा सहा चिह्न भी मिट जाएगा । इस प्रतिज्ञा ने उन्हें हमारे समाज से बाहर कर दिया । अब हमारा उनसे कोई संपर्क नहीं ।

अथवा

अपनी इष्ट देवी की उपासना करना क्या लज्जा की बात है ? प्रेम ईश्वरीय प्रेरणा है, ईश्वरीय संदेश है । प्रेम के संसार में आदमी की बनायी सामाजिक व्यवस्थाओं का कोई मूल्य नहीं । विवाह समाज के संगठन की केवल आयोजना है । जात-पात केवल भिन्न-भिन्न काम करने वाले प्राणियों का समूह है । काल के कुचक्र ने तुम्हें एक ऐसी अवस्था में डाल दिया है, जिसमें प्रेम-सुख की कल्पना करना ही पाप समझा जाता है; लेकिन सोचो तो समाज का यह कितना बड़ा अन्याय है ।

2. 'कालजयी' के प्रथम सर्ग में कवि की मुख्य चिंता क्या है ? स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

'मधुशाला' काव्य का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

3. " 'प्रतिज्ञा' उपन्यास नारी की समस्याओं पर केन्द्रित है ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । 15

अथवा

अमृतराय का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

4. 'सत्ता के आर-पार' नाटक का क्या उद्देश्य है ? विचार कीजिए । 15

अथवा

'सत्ता के आर-पार' नाटक के किसी **एक** पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 6

(क) 'मधुशाला' की काव्य-भाषा

(ख) 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की भाषा-शैली ।